سُورَةُ ٱلْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ

सूरह फातिहा मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

[आरंभ (शुरू)] अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ (1)

समस्त प्रशंसाएं (स्तुतियां) अल्लाह ही के लिए हैं, जो समस्त जगत का पालनहार है।

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ (2)

अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील (है)।

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ (3)

प्रतिफल (बदले / क़यामत) के दिन का मालिक।

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ (4)

(ऐ अल्लाह) हम तेरी ही उपासना (बन्दगी / इबादत) करते हैं और तुझ ही से सहायता मांगते हैं।

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ (5)

(ऐ अल्लाह) हमें सीधा मार्ग दिखा दे।

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ ٥ 6 غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ع (7)

उन लोगों का मार्ग जिनपर तूने इनाम (कृपा) किया, ना (उनका मार्ग) जिनपर (तेरा) क्रोध हुआ, और ना पथभ्रष्टों (का मार्ग)।